निदाई-गुड़ाई -

भूमि की आवश्यकतानुसार दो-तीन बार निदाई-गुड़ाई करके खरपतवार निकाल देना चाहिए । निदाई करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि कलिहारी का तना टूटे नहीं क्योंकि यह बहुत कमजोर होता है । यदि टूट गया तो फिर अगले वर्ष नहीं लिकलेगा ।

रोग व रोकथाम -

कलिहारी स्वयम् एक उपविष है। इस कारण किसी भी प्रकार के कीटनाशक की आवश्यकता नही होती । कभी-कभी कुछ कीटों जैसे - लिली ग्रीन केटरपिलर, लीफ ब्लाइट व राइजोमराट का प्रकोप हो जाता है। इसके निवारण हेतु एक दो बार उपयुक्त फफूंद नाशकों का छिड़काव करना चाहिए ।

दोहन व संग्रहण -

कलिहारी के पौधों पर फूल अगस्त-सितम्बर माह में व फल अक्टूबर-नवम्बर माह तक आते हैं। इसकी फसल लगभग **170-180** दिनों में तैयार हो जाती है। दिसम्बर माह में पके फल जो हल्के हरे पीले रंग के होते हैं, उन्हें तोड़कर छायादार स्थानों पर **10-15** दिनों तक सुखाना चाहिए। फलों से बीज अलग करके अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए। छिलका व बीज दोनों ही उपयोगी होते हैं। तत्पश्चात् अलग-अलग बोरों या पालीथीन बेग में संग्रहित कर लेना चाहिए ।

5-6 साल की फसल के बाद कंदो को उखाड़कर सुखाने से पूर्व धोकर छोटे-छोटे टुकड़े करके अच्छी तरह से सुखाना चाहिए । क्योंकि इन्हें सूखने में लगभग **2** माह लग जाते हैं ।

उत्पादन व उपज -

कलिहारी की अच्छी फसल से प्रति हेक्टेयर **250-300** कि0ग्रा0 बीज मिलते हैं। साथ ही पाँचवे वर्ष उपरान्त **2.5-3.00** टन सूखे कंद भी प्राप्त होते हैं।

बाजार मूल्य -

कलिहारी के बीजों व सूखे कन्दों का बाजार मूल्य क्रमशः लगभग **400-500** रू. व **50-100** रू. प्रति कि0ग्रा0 होता है।

अनुमानित आय-व्यय प्रति हेक्टेयर -

कलिहारी की खेती से **5** वर्षों तक होने वाली शुद्ध आय लगभग **2.5-3.00** लाख रूपये तक होती है। दूसरे वर्ष से ही किसान बीजों को बेचकर प्रतिवर्ष लाभ भी लेते रहता है।

संकलन एवं संपादन :

डॉ. ए. के. पाण्डे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. - आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर - 482021

फोन : 0761-2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. - आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर - 482021

फोन : 0761-2840627

Amrit Offset # 2413943

कलिहारी

(Gloriosa superba)

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

डाकघर - आर.एफ.आर.सी, मण्डला रोड

जबलपुर - 482 021 (म.प्र.)

परिचय -

कलिहारी एक बहुवर्षीय लता है। यह लिलियेसी कुल का सदस्य है। इसका वानस्पतिक नाम ग्लोरियोसा सुपरबा है। अत्यधिक अविवेकपूर्ण दोहन के कारण यह प्रजाति लुप्तप्रायः पादप श्रृंखला में सम्मिलित हो चुकी है। यह महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है। इसका कंद पतला, लम्बा तथा जमीन के नीचे की तरफ कंदवत मासल हल के आकार का होता है।

वानस्पतिक विवरण -

कलिहारी लतानुमा पौधा है। यह पौधा वर्षा ऋतु में निकलता है। इसके पत्र वृतरहित, लट्वाकार, भालाकार, बाँस या अदरक के पत्तों के आकार के लगभग 6 - 8 ईंच लम्बे तथा 1.5 ईंच चौड़े व नोक पर सुत्रवार घुमावदार होते हैं। फल 2 ईंच तक लम्बे, 3 लम्बी धारियाँयुक्त। वर्षा ऋतु में फूल व फल आते हैं। इसके पुष्प लाल गुच्छेदार मनमोहक होते है।

भौगोलिक वितरण -

कलिहारी समस्त भारतवर्ष में छः हजार फीट तक की पर्वत श्रृंखलाओं पर प्राकृतिक रूप में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त श्रीलंका, वर्मा, मलाया, चीन व अफ्रीका में भी सुलभता से पाया जाता है। यह मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ व उड़ीसा के वनों में भी पाया जाता है।

औषधीय उपयोग -

कलिहारी कण्ठमाल, गठिया व वात वेदना, कुष्ट टानिक के रूप में तथा गर्भपातन में उपयोगी होता है। यह एक उप-विष है अल्प मात्रा में देने पर दीपन, कुटु पौष्टिक, ज्वर रोधी व अधिक मात्रा में देने पर गर्भ निस्सारक के रूप में कार्य करता है।

सक्रिय घटक -

कलिहारी के कन्द, फल व बीजों में कोल्चीसीन व ग्लोरियोसीन क्षाराभद्रव (अल्केलाइड्स) तथा सुगंधित तेल, बेन्जोईक अम्ल तथा शर्करा आदि पाये जाते हैं।

भूमि एवं जलवायु -

कलिहारी की खेती के लिए बलुई, दोमट मिट्टी जिसमें जल निकास की उत्तम व्यवस्था हो व पी0एच0 6-7 तक हो, सर्वोत्तम होती है। जल निकास की किसी भी प्रकार की भूमि में भी इसे आसानी से उगाया जा सकता है ।

कृषि तकनीक -

खेत की तैयारी – खेती के लिए चयनित खेत को ग्रीष्म ऋतु में दो-तीन बार गहरी जुताई करके लगभग 8-10 टन कम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद मिला देना चाहिए। तत्पश्चात् लगभग 50 - 50 से0मी0 की दूरी पर नालियाँ बनाकर खेत तैयार कर लेना चाहिए।

प्रवर्धन -

कलिहारी का प्रवर्धन बीजों व कन्दों द्वारा किया जाता है। प्रवर्धन के लिये कंदो का वजन 50 से 60 ग्राम तक होना चाहिए।

बुआई -

कलिहारी के पौधों को रोपणी में बीजों द्वारा तैयार कर रोपित किया जा सकता है, परन्तु ऐसा करने से प्रथम वर्ष में केवल कन्द ही तैयार हो पाते हैं तथा इन पर फूल व बीज नहीं आ पाते हैं। यदि इसकी बोआई ऐसे कन्दों से की जाय जिनका वजन लगभग 50 से 60 ग्राम तक हो तो प्रथम वर्ष में ही फल व बीज प्राप्त होते हैं। यदि बीजों से ही फसल तैयार करनी हो तो वर्षा के प्रारम्भ होने के पूर्व रोपणी में 4-6 ईंच की दूरी पर बुआई कर देनी चाहिए। दूसरे वर्ष इन कन्दों को खोदकर 0.1 प्रतिशत फफूँदनाशक घोल से उपचारित कर वर्षा ऋतु में मेढ़ों पर 50 से0मी0 कतार से कतार व 45 से0मी0 कन्द से कन्द की दूरी रखकर 6-9 ईंच गहरा लगा देना चाहिए। इस प्रकार लगभग 8-9 क्विंटल कंदों की आवश्यकता प्रति हेक्टेयर होती है। यह एक आरोही लता है, अतः इसके आरोहण हेतु झाड़ियों व पेड़ों की सूखी डालियों को प्रत्येक कंद के बगल में गाड़ देना चाहिए।

सिंचाई -

वर्षा ऋतु में सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु वर्षा काल के उपरान्त आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहना चाहिए।